International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 29-02-2021, Accepted: 15-03-2021, Published: 30-04-2021
Volume 7, Issue 2, 2021, Page No. 119-121

वर्तमान भारतीय संगीत में नवाचार

डॉ. शम्पा चौधरी
असोसिएट प्रोफेसर, संगीत विभाग, वी. एम. एल. जी. कॉलेज, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
वर्तमान युग को वैज्ञानिक एवं वैश्विक दो परिदृश्यों पर देखा जा रहा है। विज्ञान के क्षेत्र में उत्तरोत्तर प्रगति ने मानव जीवन के प्रत्येक पहलू को प्रभावित कर नवोन्मेषशाली होने के लिए उत्प्रेरित किया है अतएव नयी सोच, नई दृष्टि, नयी कल्पना, नये प्रयोग, नयी खोज, नये उन्मेष, नये परिवर्तन, नये आविष्कार, नये सृजन अथवा निर्मिति, नयी–नयी उपज, समसामयिकता अथवा 'कन्टेम्परेरी' एवं नवाचार इत्यादि इस युग के मानव की जीवन–शैली और व्यवहार के प्रमुख अंग बन गये। कलाओं की दृष्टि से विचार करें तो ये तत्व संगीत के सृजनधर्मी मानव–जीवन के सबसे निकट माने जा सकते हैं क्योंकि मानवीय भावों–संवेगों की अभिव्यक्ति की सबसे सहज, सशक्त एवं सर्वोत्कृष्ट भाषा अथवा माध्यम 'संगीत' ही है क्योंकि कहा भी गया है ''Music is the best language of human emotions'' कलाकारों ने हर देश, काल एवं परिस्थितियों के बदलते परिवेश को जीते हुए उससे उद्भूत सुख–दुखादि भावों एवं स्वानुभवों को अपनी कलाओं में उकेरकर साकार रूप दिया है। मानव एक सामाजिक प्राणी है अतएव सामाजिक सरोकारों से जो भी उसे प्राप्त हुआ एवं उसके जीवन का अंग बना, उसका प्रभाव उसके प्रत्येक सृजन एवं क्रियान्विति में पड़ना स्वाभाविक है, वह कभी सहज रूप से तो कभी सामाजिक बदलाव के कारण कलाओं का अंग बना। वैज्ञानिक उन्नति, व्यावसायिकता, बाजारीकरन, प्रतिद्वंदिता एवं वैश्वीकरण आदि–आदि अहम् कारणों से सृजन में परिवर्तन एवं विकास के साथ कई पायदान पार किये।

मूल शब्दः संगीत, परिवर्तन, नवाचार, प्रयोग, पाश्चात्य, भूमंडलीकरण, वैश्वीकरण

आज संगीत के विविध इन्द्रधनुषीय स्वरूपों को साकार करने वाले इस नवीन वर्तमान युग में 'नवाचार' शब्द बहुत प्रखर रूप से मुखर हुआ है। इसका कारण प्रमुख रूप से है संगीत का वैश्वीकरण एवं वैज्ञानीकरण। आज के संगीत साधकों का दायरा बहुत गहनता एवं विस्तार ले चुका है, जो कि वैज्ञानिक खोजों एवं उसकी विविध संभावनाओं को आत्मसात करते हुए विश्वपटल में व्याप्त संगीत के नये रूपों प्रारूपों से उत्प्रेरित होकर अपने संगीत में नई सोच, खोज, विचार, दृष्टि, प्रयोग, आविष्कार, उपज, समसामयिकता अथवा कन्टेम्परेरी एवं नवोन्मेषों द्वारा 'नवाचारों' का सतत् सर्जक बन रचनात्मकता के नये आयामों को नित दिन–प्रतिदिन साकार करता जा रहा है।

भारतीय हिन्दी साहित्य में जिस प्रकार नयी कविता का पूरा युग बना, उसी प्रकार 19वीं शताब्दी विशेषकर स्वतन्त्रता के उपरान्त के युग में संगीत की परम्परागत शैलियों एवं सीमाओं को लांघकर उसके कला साधकों द्वारा नयी उर्जा एवं नयी सम्भावनाओं के साथ संगीत को नये कलेवर में प्रस्तुत किया गया, जिसने संगीतकारों की उन्नति के सम्भावित अनेक रास्ते खोल दिये। माना जाये तो 'नवाचार' संगीत के हर युग में समसामयिकता की दृष्टि से दिखाई देता रहा है। नवीनता की सतत् साधना में राग, थाट, शैलियाँ, घराने, विधाएँ, प्रस्तुतीकरण, तकनीक, भाषा–बोली, साहित्य–रचना, संवादों, मूर्छनाओं–हारमनी के चमत्कारों, विविध देशी–विदेशी–लोक संस्कृतियों का आमेलन कर नये राग, ताल एवं साज और उनके आकार–प्रकार के साथ उनका बर्ताव एवं लिपियाँ आदि–आदि हर युग के नवाचारों का स्वर्णिम इतिहास रचती आई है। यद्यपि भारतीय संगीत के लिए नवाचार सदैव चुनौती का विषय रहा है किन्तु सृजनशील कलाकार हर युग में परम्परानुसरण के साथ नवीनता के भी रचनाकार रहे हैं एवं उन्होंने ही भारतीय संगीत का वह इतिहास लिखा जिनके प्रयोग दृष्टिकोण के कारण आज संगीत में नवाचार संभव हुआ है।

भारत देश कला व संस्कृति का प्रतीक माना जाता है। भारतीय संगीत हमारे भारत की अमूल्य धरोहर के रूप में अति प्राचीन काल से ही सर्वोच्च स्थान पर विद्यमान है। सृष्टि की उत्पत्ति के साथ ही संगीत भी अस्तित्व में आया होगा, ऐसा माना गया है। परंतु देखा जाये तो प्रकृति के रोम–रोम में ही संगीत बसता है। नदियों की बहती धारा, कल–कल की ध्वनि, हवा की सन–सन् ध्वनि, पत्तों से टकराती हवा की ध्वनि व पत्तों पर गिरती बारिश के बूंदों के टप–टप की ध्वनि, पक्षियों की चहचहाट आदि में संगीत को देखा, सुना, समझा व महसूस भी किया जा सकता है। संगीत ही धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का एकमात्र साधन है।

भारत में पिछले कई वर्षों से सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक रूप से निरंतर परिवर्तन होते आये हैं जिसका प्रभाव निश्चित ही कला व संस्कृति पर भी पड़ता आया है। संगीत तो वैदिक काल से ही मानव सभ्यता का अंग रहा है, तो इसमें भी परिवर्तन आना अपरिहार्य है।

भारतीय संगीत के इतिहास के अनुसार प्रत्येक काल में चाहे बौद्ध काल या जैन काल या रामायण व महाभारत काल या पौराणिक काल या गुप्त काल या मौर्य काल या राजपूत काल या मुगल काल हो, सभी कालों में संगीत की स्थिति व उसमें कई बदलाव दिखाई देते हैं। चूँकि प्रत्येक काल का राजा अपनी पसंद के अनुरूप संगीत को मान देता था, इसके अलावा प्रत्येक काल में संगीत के ही अनेक ऐसे विद्वान व संगीतज्ञ हुए जिन्होंने संगीत पर कई ग्रंथ लिखे। जैसे–भरतकृत नाट्यशास्त्र, शारंगदेव कृत संगीत रत्नाकर, मतंगकृत बृहद्देशी, अहोबलकृत संगीत पारिजात आदि। प्रत्येक ग्रंथ में संगीत के नवीन–नवीन पारिभाषिक शब्दों के साथ संगीत का स्वरूप भी बदलता रहा है। जैसे–सर्वप्रथम जाति गायन था, फिर प्रबंध गायन, ध्रुपद गायन, फिर ख्याल गायन प्रचलित हुआ, उसी तरह ग्राम राग वर्गीकरण, मेल राग वर्गीकरण, फिर राग–रागिनी पद्धति, रागांग वर्गीकरण और अंततः थाट राग वर्गीकरण पद्धति प्रचार में आई जिसका श्रेय स्व. पं. विष्णु नारायण भातखण्डे जी को जाता है। इस प्रकार संगीत में कई परिवर्तन देखने को मिलते हैं– प्रायोगिक व सैद्धांतिक दोनों ही पक्षों में। आज तो भारतीय संगीत की विविध धारायें बन गई हैं जैसे शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत, फिल्म संगीत, नाट्य संगीत, लोक संगीत, उपशास्त्रीय संगीत। इन सभी प्रकारों में

शास्त्रीय संगीत मुख्य आधार है सभी प्रकारों का। शास्त्रीय संगीत को रागदारी संगीत भी कहा जाता है जिसमें ख्याल गायन होता है। शास्त्र में बंधा होने के कारण शास्त्रीय संगीत अन्य प्रकारों की अपेक्षा सूक्ष्म है व समझाने में भी कठिन है। इसीलिये शास्त्रीय संगीत की महफिलों को सुनने के लिए एक विशिष्ट समुदाय ही उपस्थित होता है जो इसका जानकार है, जिसे शास्त्रीय संगीत की समझ हो। शास्त्रीय संगीत में भी प्रत्येक काल में जनरूचि के अनुसार कुछ बदलाव आते गये। आज के युवा कलाकार किसी एक घराने से संबंधित तो होते हैं किंतु अपने मूल घराने की गायकी में अन्य घरानों की कुछ अच्छी बातें या गुण भी सम्मिलित करते हैं जिससे उनकी गायकी में अधिक निखार आ जाता है अर्थात् अपने मूल घराने की विशेषताओं को कायम रख अन्य घरानों की कुछ विशेषताएँ या विचार या कल्पनाएँ जोड़ कर नवीन गायकी का रूप उपस्थित होता है। इस दृष्टि से आज के युग में संगीत में नवाचार करना नयी बात नहीं है। जिस प्रकार एक पीढ़ी से दूसरी पीढी के काल में, उनके आचार–विचार, रहन–सहन, तकनीकी प्रयोग आदि में बहुत अंतर जान पड़ता है उसी प्रकार जब शास्त्रीय संगीत भी एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को सिखाया जाता है तब दूसरी पीढ़ी द्वारा उसके मूल रूप में कुछ नया जोड़ा जाता है। शास्त्रीय संगीत को लोकप्रिय व प्रचार–प्रसार में लाने के लिये अनेक माध्यम है जिसमें आकाशवाणी, दूरदर्शन, संगीत नाटक अकादमी व शासन द्वारा प्रति वर्ष अनेक स्थानों पर आयोजित संगीत गोष्ठियाँ, कार्यक्रम, संगीत सम्मेलन आदि। इसके अलावा महाविद्यालयी शिक्षा प्रणाली भी शास्त्रीय संगीत को आगे बढ़ाने के लिए सहायक सिद्ध होती है किंतु इंटरनेट का माध्यम आज शास्त्रीय संगीत को प्रचार में लाने के लिए अहम् है। यहाँ तक कि आज शास्त्रीय संगीत को चिकित्सा पद्धति के रूप में भी अपनाया जा रहा है। किंतु समाज में आज भी कहीं–न–कहीं एक वर्ग ऐसा है विशेषतः युवा वर्ग जिसे शास्त्रीय संगीत सुनना बिल्कुल भी पसंद नहीं तथा जिनका आकर्षण रॉक बैण्ड, जैज म्यूजिक, वेस्टर्न म्यूजिक की तरफ अधिक है। ऐसे वर्ग को शास्त्रीय संगीत से जोड़ने के लिये शास्त्रीय संगीत को केवल एक प्रयोग के तौर पर फ्यूजन के माध्यम से प्रस्तुत करना संगीत में नवाचार करना हो सकता है। वैसे संगीत में, वह भी शास्त्रीय संगीत में कुछ प्रयोग करना सहज नहीं होता, वहाँ नवाचार कहाँ तक उचित है, यह तो उसको प्रयोग करने के बाद ही स्पष्ट हो सकता है। जरूरी नहीं कि किया गया प्रयोग श्रोताओं को पसंद ही आये क्योंकि उस प्रयोग को सफल बनाने में प्रस्तुत करने वाले कलाकारों का जितना योगदान होता है उतना ही श्रोताओं का भी, क्योंकि उसकी सफलता का निष्कर्ष श्रोताओं व कला समीक्षकों द्वारा ही किया जाता है।

फ्यूजन अर्थात मिश्रण, संगीत में फ्यूजन का अर्थ है किसी एक शैली में अन्य शैली को जोड़ना या किन्हीं दो शैलियों को साथ में प्रयोग कर प्रस्तुत करना। फ्यूजन काफी प्रकार के होते हैं जैसे एक फ्यूजन ऐसा होता है जो पूर्णतः पाश्चात्य शैली पर आधारित होता है। फ्यूजन मूलतः पाश्चात्य शैली से ही उपजा हुआ है। एक फ्यूजन ऐसा भी होता है जिसमे गायक या वादक किसी एक राग में उस राग के अलावा अन्य रागों के स्वरों का प्रयोग देशी–विदेशी वाद्यों के साथ करते हैं। वादन में भी फ्यूजन किया जाता है, जिसमें कुछ भारतीय शैली के वाद्यों के साथ कभी पाश्चात्य वाद्यों का तो कभी कर्नाटक शैली के वाद्यों का मिश्रण कर प्रस्तुतीकरण होता है। साथ ही गायन में भी उत्तर भारतीय संगीत के साथ कर्नाटक संगीत की जुगलबंदी भी आजकल प्रयोग के रूप में की जा रही है। आज के युग में नृत्य में भी कुछ नवीनता लाने के लिये फ्यूजन किया जा रहा है जो कि लोगों को पसंद भी आ रहा है। ऐसे में शास्त्रीय संगीत में फ्यूजन करना कुछ गलत नहीं है क्योंकि शास्त्रीय संगीत मूल रूप से स्थिर रहेगा चाहे कितने भी उसके साथ प्रयोग किये जाये, उसकी मौलिकता कभी नष्ट नहीं हो सकती।

आज के युग में प्रत्येक क्षेत्र में नवीन–नवीन प्रयोग हो रहे हैं, नवीन खोज हो रही है जिसका उद्देश्य केवल कुछ नूतन अन्वेषण करना है। उसी प्रकार केवल ऐसे युवा वर्ग को ध्यान में रखकर या उन्हें शास्त्रीय संगीत में रुचि निर्माण हो सके। इसके लिए शास्त्रीय संगीत में मूल शास्त्रीय गायन को पाश्चात्य वाद्यों के साथ फ्यूजन के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। फ्यूजन से भारतीय शास्त्रीय संगीत को किसी प्रकार का कोई नुकसान न पहुंचे इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए शास्त्रीय संगीत में फ्यूजन ऐसा होना चाहिये जिससे शास्त्रीय संगीत व राग में लगने वाले स्वर, स्वर–संगतियाँ, बंदिश को बिल्कुल भी हानि न हो अर्थात कलाकार द्वारा वह राग पूर्णत उसके शुद्ध रूप में ही श्रोताओं तक पहुँचे। फ्यूजन करने के लिए शास्त्रीय संगीत में संगति के लिये उपयोग में लाये जाने वाले अपेक्षित कुछ पाश्चात्य शैली के वाद्यों का उपयोग किया जा सकता है जैसे– कीबोर्ड, ड्रम सेट, सेक्सोफोन, गिटार, कांगो आदि वाद्य यंत्र। अर्थात शास्त्रीय रागों की बंदिशो को पाश्चात्य रिद्म के साथ गाना, फलस्वरूप, शास्त्रीय संगीत में फ्यूजन शास्त्रीयता के अनुरूप शुद्ध भी रहे और पाश्चात्य वाद्य भी रहे, के साथ गाने पर रॉक व जैज प्रकार का भी रहे ऐसे प्रयोग से युवा वर्ग शास्त्रीय संगीत से जुड़ सकता है और एक बार शास्त्रीय संगीत के प्रति उसकी रूचि निर्माण हो जाये तब धीरे–धीरे उसे शुद्ध शास्त्रीय संगीत की तालीम दी जा सकती है। क्योंकि आज का युवा हमेशा कुछ न कुछ नवीन की तरफ अधिक जल्दी आकर्षित होता है, ऐसे में यह प्रयोग उसे शास्त्रीय संगीत की तरफ रुझान बढ़ाने में उपयोगी हो सकता है।

प्रत्येक क्षेत्र में किया गया नवीन प्रयोग एक चुनौतीपूर्ण कार्य होता है। शास्त्रीय संगीत के ऐसे विद्वानों व संगीतज्ञों के समक्ष ऐसा प्रयोग किया जाये जो परम्परागत रूप से शुद्ध शास्त्रीयता को मानने वाले हो, तब शास्त्रीय संगति में फ्यूजन का प्रयोग और भी चुनौतीपूर्ण होता है। किंतु रागों के मूल स्वरूप में बिल्कुल भी फेरबदल न करके पाश्चात्य वाद्यों के साथ सामंजस्य बनाते हुए यदि गायक एवं वादक ऐसा प्रयोग करे तो अनुचित नहीं होना चाहिए। वैसे भी प्रयोगात्मक दृष्टि से एवं आज के काल के हिसाब से ऐसा प्रयोग उचित भी है। चूँकि आज के भागते–दौड़ते जीवन में लोगों को कभी–कभी परम्परा से हटकर कुछ नया देखना व सुनना अच्छा लगता है, ऐसे में प्रयोग के तौर पर शास्त्रीय संगीत में फ्यूजन कर एक नवीन कल्पना या विचार को श्रोताओं तक पहुँचाना गलत नहीं है। परिणामस्वरूप शास्त्रीय संगीत को सुनने व समझने वालों की संख्या में वृद्धि होती है, साथ ही युवा और सामान्य विद्यार्थी भी शास्त्रीय संगीत से जुड़ते हैं तथा सीखने में रूचि लेते हुए दिखाई देते हैं। शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में कई बड़े–बड़े दिग्गज कलाकार भी केवल एक प्रयोग के रूप में तथा कुछ नवीन खोज करने के लिए फ्यूजन का आधार लेते हुए मिलते हैं, जैसे उ. राशिद खाँ, पं. अजय पोहनकर, सुश्री कौशिकी चक्रवर्ती, उ. जाकिर हुसैन, उ. तौफिक कुरेशी आदि।

वास्तविकता तो यह है कि ये सभी घरानेदार कलाकार हैं, तो इनके द्वारा ऐसे प्रयोग करने पर क्या ये शास्त्रीय संगीत के विरुद्ध जा रहे हैं। क्या ये शास्त्रीय संगीत में फ्यूजन करके नवीन विधा को स्थापित करना चाहते हैं? क्या श्रोता जितना इनके द्वारा किये गये फ्यूजन को सुनना पसंद करते हैं, उतना शास्त्रीय संगीत को नहीं? उपरोक्त सभी प्रश्नों का उत्तर निश्चित रूप से देना संभव नहीं है। इनके द्वारा किये गये फ्यूजन को श्रोता

उतना ही पसंद करते हैं जितना उनके शास्त्रीय गायन को। न ही ऐसा प्रयोग करने से शास्त्रीय संगीत की धारा को रोका जा सकता है, न ही किसी नवीन विधा को स्थापित किया जा सकता है, क्योंकि शास्त्रीय संगीत एक नदी के समान है, जिसकी धारा प्राचीनकाल से बहती रही है. बह रही है और भविष्य में भी बहती ही रहेगी।

भारतीय सगीत की पृष्ठभूमि वैदिककाल से लेकर पुराणकाल तक तथा पुराणकाल से लेकर आधुनिककाल तक अनवरत् जो प्रयोग हुए अथवा हो रहे हैं, उन सभी का मूल उद्देश्य सँगीत के जिज्ञासुओं एवं विद्यार्थियों के लिए सहज एवं सुगम पृष्ठभूमि तैयार करना रहा है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोधपत्र के माध्यम से यह बताने का प्रयास है कि आज के युग के युवा वर्ग को शास्त्रीय संगीत से जोड़ने तथा कुछ नवीन खोज या कल्पना को मांडने की दृष्टि से केवल प्रयोग के रूप में शास्त्रीय संगीत जैसे परम्परागत शैली में भी फ्यूजन कर संगीत में नवाचार हो सकता है बशर्ते शास्त्रीय संगीत को किसी भी तरह से हानि न हो।

आज हम सोशल मीडिया के माध्यम से हजारों वीडियो प्राप्त कर सकते हैं जिसमें भारतीय संगीत के साथ फ्यूजन संगीत का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध प्रपत्र के सूक्ष्म विश्लेषण से यह स्पष्ट रूप से सिद्ध होता है कि वर्तमान युग विज्ञान का युग है अगर विज्ञान एक वरदान है तो कहीं अभिशाप भी। फिर भी संगीत एवं कला के साथ किए गए प्रयोग भारतीय संगीत को एक नई ऊँचाई प्रदान कर सकती है। आज हम यह कह सकते हैं कि भारतीय संगीत का प्रचार प्रसार प्रचुर मात्रा में हो रहा है और यह सब पाश्चात्य प्रभाव, सोशल मीडिया एवं हमारे संगीत शास्त्रियों के नवाचारिक प्रयोग के आधार पर ही संभव हो पाया है।

संदर्भ सूची

1. डॉ. तैलंग, मधु भट्ट, शर्मा, सत्यवती, भारतीय संगीत में नवाचार, लिटरेरी सर्कल प्रकाशन, जयपुर, पृ.2
2. गौतम, अनिता, भारतीय संगीत में वैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग, कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृष्ठ (प्राक्कथन), संस्करण 2008
3. भृगुवंशी, डॉ. शिखा, संगीत शास्त्र एवं संगीत प्रदर्शन, कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृष्ठ सं. 309, संस्करण 2013
4. ऋषितोष डॉ. कुमार, संगीत के विविध आयाम, कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृ.सं. 27. संस्करण 2010
5. पंत,डॉ. शिप्रा, राग शास्त्र में पारम्परिक बंदिशों की भूमिका, अंकित पब्लिकेशन्स, मॉडल टाउन, दिल्ली, पृ. सं. 20, संस्करण 2011
6. मित्तल, अंजली, भारतीय सभ्यता, संस्कृति एवं संगीत, कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृ.सं. 07, संस्करण 2003
7. डॉ. रामशंकर, उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत की बंदिशों में भाषा का स्थान, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.सं. 11, संस्करण 2011
8. बनर्जी, डॉ. असित कुमार, हिन्दुस्तानी संगीत परिवर्तनशीलता (भूमिका), पृं. सं. 1
9. महेन्द्र, नीलम बाला, आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीयकरण में भारतीय शास्त्रीय संगीत की भूमिका, कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृ.सं. 236, संस्करण 2011